Little Control of the Control of the



प्रहावारण

EXTRAORDINARY

भाग II---वाण्य 3---उपवाण्य (ii)

PART II-Section 3-Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 323}

नई बिल्ली, मंगलवार, श्रगस्त 26, 1975/भाष्र 4, 1897

No. 323]

NEW DELHI, TUESDAY, AUGUST 26, 1975/BHADRA 4, 1897

इस भाग में भिन्न पुष्ठ संस्था वी जाती है जिससे कि यह गलग संकलन के कप में रखा जा सके ।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation.

MINISTRY OF INDUSTRY AND CIVIL SUPPLIES

(Department of Industrial Development)

ORDER

New Delhi, the 26th August 1975

S.O. 447(E).—Whereas the Central Government is of the opinion that there has been a substantial fall in the volume of production in respect of jute products manufactured in the industrial undertaking known as Shree Ambica Jute Mills, Calcutta, for which, having regard to the economic conditions prevailing, there is no justification;

And whereas the Central Government is further of the opinion that the said industrial undertaking is being managed in a manner highly detrimental to the scheduled industry concerned and to the public interest;

Now, therefore in exercise of the powers conferred by section 15 of the Industries (Development and Regulation) Act, 1951 (65 of 1951), the Central Government hereby appoints, for the purpose of making a full and complete investigation into the circumstances of the case, a body of persons consisting of :—

Chairman

 Shri K. K. Chatterjee, Industrial Adviser in the office of the Jute Commissioner, Calcutta.

Members

- 2. Shri N. Ray, Deputy Scoretary, Closed and Sick Industries Department, Government of West Bengal, Calcutta.
- Dr. U. Bhattacharya, Executive Director, National Textile Corporation (West Bengal, Assam, Bihar and Orissa), Calcutta.
- Shri N. C. Bardhan, Assistant Cost Accounts Officer, Office of the Jute Commissioner, Calcutta.

[No. F.3/3/75-CUC] D. K. SAXENA, Jt. Secy.

उद्योग धौर नागरिक पूर्ति मंत्रालय (श्रौद्योगिक विकास विभाग)

ग्रादेश

नई दिल्ली, 26 श्रगस्त, 1975

का० आ० 447 (आ).—केन्द्रीय सरकार की राय है कि श्री ग्रम्बिका जूट मिल्स, कलकत्ता, नामक ग्रौद्योगिक उपक्रम में जूट उत्पादों के विनिर्माण की बाबत उत्पादन की मान्ना में तात्विक गिरावट ग्रा गई है, जिसके लिए विद्यमान ग्राधिक स्थिति को इध्यान में रखते हुए कोई भौनित्य नहीं है;

तथा केन्द्रीय सरकार की यह श्रौर राय है कि उक्त श्रौद्योगिक उपक्रम का प्रबन्ध ऐसी रीति से किया जा रहा है जो सम्बद्ध श्रनुसूचित उद्योग तथा लोक हित के लिए श्रिति श्रहितकर है ;े

श्रतः श्रव, केन्द्रीय सरकार उद्योग (विकास श्रीर विनियमन) श्रिधिनियम, 1951 (1951 का 65) की धारा 15 द्वारा प्रवत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए मामले की परिस्थितियों की पूर्ण जांच-गड़ताल करने के प्रयोजनार्थ व्यक्तियों का एक निकाय नियुक्त करती है, जिसमें निम्नलिखित होंगे:--

ध्यक

1. श्री के० के० चटर्जी, श्रीद्यौगिक सलाहकार, जूट श्रायुक्त कार्यालय, कलकत्ता ।

सर्वस्य

- 2. श्री एन० राय, उप-सचिव, बन्द तथा रुग्ण उद्योग विभाग, पश्चिमी बंगाल सरकार, कलकत्ता।
- डा० यू० भट्टाचार्य, कार्यकारी निदेशक, राष्ट्रीय वस्त्र निगम (प० बंगाल, भ्रासाम, बिहार और उड़ीसा) कलकत्ता ।
- 4. श्री एन० सी० बर्धन, सहायक लागत लेखा श्रधिकारी, कार्यालय जूट श्रायुक्त, कलकत्ता।

[सं० फा० 3/3/75-सी०यू०सी०]

डी० के० सक्सेना, संयुक्त सचिव ।